†**श्री गाडगील** : यह एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रतिवेदन है तथा केवल दो घंटे इसको देना उचित नहीं है। मेरा सुझाव है कि चर्चा दो घंटे तक रहे तथा फिर मिलने पर इस पर विचार के लिये और समय दिया जाये ।

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : सरकार का विचार इस मामले पर, इस सत्र में चर्चा करने का नहीं था। इस कारण नहीं कि यह महत्वपूर्ण नहीं है अपितु इस कारण कि हम विभिन्न मंत्रालयों तथा सरकार के विभागों और मंत्रिमंडल द्वारा इसके विभिन्न पहुलओं की जांच कराना चाहते थे। स्पष्टरूप से मैं यह कह सकता हूं कि हम इसकी जांच कर रहे है तथा यदि मुझसे इस सम्बन्ध में कुछ कहने के लिये कहा जाये तो संक्षेप में इस सम्बन्ध में मैं यही कहूंगा कि मैं माननीय सदस्यों के विचार सुनने यहां आया हूं। मुझे प्रसन्नता होगी यदि इन प्रश्नों पर चर्चा हो। मैं नहीं कह सकता कि अगले सत्र में क्या होगा।

दुर्भाग्यवश, माननीय प्रस्तावक का भाषण सुनते हुए, मैं डा० एपलबी के प्रतिवेदन के सम्बन्ध में इतना सचेत नहीं था जितना महालेखा परीक्षक के सम्बन्ध में। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह भी एक महत्वपूर्ण भाग है। परन्तु मैं चाहता था कि वह प्रतिवेदन के अन्य भाग के सम्बन्ध में भी कुछ कहते। तथा वह भाग वह है जहां उन्होंने संसदीय हस्तक्षेप की आलोचना की है अथवा संसद् के निमंत्रण की चर्चा की है। इन बातों पर संसद् को विचार करना चाहिये। अन्य मामले कम महत्व के हैं तथा इसको प्रस्तुत करते समय, प्रस्तावक को यह भी बताना चाहिये था कि यह प्रतिवेदन किस प्रकार बनाया गया। मैं माननीय सदस्यों का ध्यान प्रतिवेदन के प्रथम पृष्ठ की ओर आकर्षित कराना चाहूंगा जहां उन्होंने सरकारी कार्यों की सराहना की है तथा फिर अपनी आलोचना करते हैं ।

मैं सदस्यों का ध्यान प्रतिवेदन के दूसरे पृष्ठ की ओर आकर्षित कराना चाहता हूं। यह प्रकाशित नहीं होना था। यह एक निजी दस्तावेज था जिसको उन्होंने मुझे तथा भूतपूर्व वित्त मंत्री को विचारार्थ प्रस्तुत किया था। उन्होंने यह बताया था कि यह प्रकाशित होने के लिये नहीं है तथा यदि हम इसका प्रकाशन भी करना चाहते हैं तो भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं है । परन्तु यह प्रकाशित करने के लिये नहीं लिखा गया है उसका उन्होंने जानबूझकर उस भाषा का प्रयोग किया है तथा वह भाषा कठोर है। मेरा विचार है कि हमें इसी दृष्टिकोण से स्वागत करना चाहिये, चाहे हम उससे सहमती हों अथवा असहमत। हमें अपना ज्ञान बढ़ाने की आवश्यकता रहती है तथा इसी आधार पर हमें विभिन्न मामलों पर विचार करना चाहिये। मैं इसकी पूर्णतः जांच कर रहा हूं। मैं इसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा का स्वागत करता हूं परन्तु समय की गारंटी नहीं देता।

†**उपाध्यक्ष महोदय** : प्रत्येक सदस्य को १० अथवा १५ मिनट मिलेंगे ।

†**श्री जयपाल सिंह** : यह बहुत कम है।

†**उपाध्यक्ष महोदय** : यदि माननीय सदस्यों की इच्छा है तो २० मिनट किये जा सकते हैं परन्तु इस तरह से केवल तीन सदस्य बोल सकते हैं।

†**श्री ही० ना० मुकर्जी** : यह एक आश्चर्यजनक बात है कि पंचवर्षीय योजना की चर्चा को बीच में छोड़ कर हम डा० एपलबी की रिपोर्ट पर विचार करने लगे हैं, जिस में कहा गया है कि संसद् सफलता प्राप्त करने के प्रयत्नों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। डा० एपलबी ने सामान्य-तया बहुत जोरदार और दोटोक बातें कही हैं, जिनसे मुझे कुछ अचंभा होता है। किन्तु हमें यह देखना है कि इस रिपोर्ट से, जो देश ने भारी रकम देकर खरीदी है, किस तरह लाभ उठाया जाये।

इसमें संदेह नहीं कि विभागीय प्रशासन की वर्तमान प्रणाली भारी भरकम, दुखदाई और समय नष्ट करने वाली है। योजनाओं के काल में इसमें विशेष रूप से परिवर्तन करने की

---

†मूल अंग्रेजी में